Topic 19 भ्वादिगण हलन्त धातु - 2

णो नः।

धात्वादेर्णस्य नः। णोपदेशास्तु - अनर्द - नाटि - नाथ - नाध - नन्द - नक्क - नॄ - नृतः।

उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य।

उपसर्गस्थात् निमित्तात् परस्य णोपदेशस्य धातोर्नस्य णः। प्रणदति। प्रणिनदति। नदति। ननाद।

उपसर्गस्थ परे णोपदेश। धातु के नकार के स्थान पर णकार होता है। उदाहरण के लिए 'नद' धातु णोपदेश है। अतः 'प्रनदति' में उपसर्गस्थ रकार 'प्र' से परे होने के कारण 'नद' के नकार को णकार होकर 'प्रणदति' रूप सिद्ध होता है।

अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि।

लिण्निमित्तादेशादिकं न भवति यदङ्गं तदवयवस्यासंयुक्तहल्मध्यस्थस्यात एत्वमभ्यासलोपश्च किति लिटि। नेदतुः, नेदुः।

थलि च सेटि।

प्रागुक्तं स्यात्। नेदिथ, नेदथुः नेद। ननाद, ननद, नेदिव, नेदिम। नदिता। नदिष्यति, नदतु। अनदत्। नदेत्। नद्यात्। अनादीत्। अनदीत्। इत्यादि समझें।

यदि इट् युक्त थल परे हो तो भी

जिस अङ्ग के आदि के स्थान में लिट्निमित्तक आदेश न हुआ हो, उसके अवयव तथा संयोग-रहित हलों के बीच में वर्तमान अकार के स्थान पर एकार

होता है और अभ्यास का लोप होता है।
उदाहरण के लिए लिट् के मध्यम एकवचन में 'णद्'
धातु से सिप् उसके स्थान पर थल् तथा पूर्ववत
अन्य कार्य होकर 'नद् नद् थल' रूप बनता है।

आदिर्ञिटुडवः।

उपदेशे धातोरादय इते ञि तु डु:

उपदेश में आदि, ञि, टु और डु इत्संज्ञक होते हैं। उपदेशावस्था में ऐसा धातुओं के विषय में ही संभव होता है, इसी से वृत्ति में धातोः का उल्लेख हुआ है। इत्संज्ञा होने पर तस्य लोप सूत्र से उनका लोप हो जाता है। उदाहरण के लिए 'टुनदि' धातु के उपदेश अवस्था में वर्तमान आदि 'टु' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, और रूप बनता है — 'नदि'। 'टु' की इत्संज्ञा का फल 'नन्दथुः' में 'ट्वितोऽथुच्' से अथुच् प्रत्यय होना है।